अध्ययन सामग्री
एम. ए. सेमेस्टर 2
CC IX UNIT 3
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
वी. कुं. सिं. वि०, आरा

उत्तररामचरितम्

11.09.20

'उत्तररामचरितम्' में भवभूति के प्रणय का आदर्श निरूपित कीजिए।

भवभूति आदर्श दाम्पत्य-प्रेम के चित्रण में अत्यधिक सफल हुए हैं। पति-पत्नी का प्रेम भवभूति ने जिस पराकाष्ठा को पहुँचाया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। सीता-राम का प्रेम आदर्श पति-पत्नी का प्रेम है, मालती-माधव का प्रेम आदर्श प्रेमी-प्रेमिका प्रेम है। मालतीमाधव में भवभूति ने उन्मुक्त प्रणय से प्रकरण का आरम्भ किया है किन्तु उनका लक्ष्य आदर्श दाम्पत्य-प्रणय का चित्रण करना है। उत्तररामचरित में भवभूति ने अपने इस लक्ष्य को परिपूर्णता प्रदान की है। उत्तररामचरित के प्रथम अङ्क से ही हमें दाम्पत्य-प्रणय के मधुर चित्र मिलते हैं। यह प्रणय सौभाग्य से प्राप्त होता है तथा सुख-दुःख-सभी परिस्थितियों में एक समान बना रहता है तथा अवस्था परिणति के साथ परिवर्तित नहीं होता और हृदय को अपूर्व शान्ति देने वाला है —

अद्वैतसुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु य-
द्विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः।
कालेनावरणात्ययपरिणते यत्प्रेमसारे स्थितं
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्रार्थ्यते ॥

भवभूति का दाम्पत्य-प्रणय पवित्र एवं भव्य है। वस्तुतः दाम्पत्य प्रेम का जितना उज्ज्वल-उत्कृष्ट चित्रण भवभूति ने किया है उतना किसी अन्य संस्कृत कवि ने नहीं किया है। सांसारिक वासना की गन्ध इस सुमानुष प्रेम में कहाँ दिखाई पड़ सकती है। मांसल प्रेम का संस्कृत के बहुत से कवियों ने वर्णन किया है और इस से कविशिरोमणि कालिदास भी मुक्त नहीं पर भवभूति के काव्य में मांसल प्रेम भी सूक्ष्म स्नेहरस में परिणत हो जाता है। सीता-राम के दाम्पत्य प्रेम का वर्णन महाकवि ने जिस परिष्कार तथा अभिनिवेश के साथ किया है वह उनकी कला का उत्कृष्ट परिपाक है। सीता के सो जाने पर राम का यह वचन द्रष्टव्य है —

इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयो -
रसावस्याः स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दनरसः।
अयं बाहुः कण्ठे शिशिरमसृणो मौक्तिकसरः
किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः॥

यह सीता घर में लक्ष्मी है, नेत्रों में अमृत की अञ्जनशलाका है, इसका यह स्पर्श शरीर में गाढ़ा चन्दन रस है, इसकी भुजा कण्ठ में शीतल-कोमल मुक्ताहार है, इसका क्या नहीं प्रिय है, यदि कोई वस्तु परम असह्य है तो इसका विरह।

सीता के प्रत्येक वचन राम के लिए आह्लादकारी एवं जीवनदायक है —

म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकासनानि
संतर्पणानि सकलेन्द्रियमोहनानि।
एतानि ते सुवचनानि सरोरुहाक्षि
कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि॥

अर्थात् हे कमलनयने! ये तेरे मधुरवचन म्लान जीवन-कुसुम को विकसित करने वाले हैं, तृप्त करने वाले हैं, सकलेन्द्रियों को मुग्ध करने वाले हैं, कानों के लिए अमृत

तथा मन के रसायन हैं।

भवभूति ने प्रेम के बहुविधरूपों का चित्रण किया है। मालतीमाधव में विवाह के पूर्ववर्ती प्रेम का वर्णन है, उत्तररामचरित में विवाह के बाद का। वियोग में प्रेम का चित्रण करने में भवभूति को विशेष आनन्द मिलता है। महाकवि कालिदास ने कहा था कि वियोग में प्रेम सञ्चित होकर और घना हो जाता है। इस प्रेमराशि का प्रत्यक्ष निदर्शन है - उत्तररामचरित। सीता और राम के वियोग में प्रेम और घना हो जाता है।

उत्तररामचरित में राम का प्रेम भी बारह वर्ष के विश्लेष के उपरान्त भी कम नहीं हुआ है अपितु उन्हें तो आश्चर्य एवं दुःख इस बात का है कि वे सीता के वियोग में अभी तक जीवित क्यों हैं -

देव्या: शून्यस्य जगतो द्वादश: परिवत्सर: ।
प्रणष्टमिव नामापि न च रामो न जीवति ॥

राम का हृदय सीता के वियोगजन्य दुःख से फटा जा रहा है, बड़ा तीव्र अन्तर्दाह हो रहा है। उनका यह करुण विलाप सहृदय-जन संवेद्य है, और वह तो स्वयं मूर्च्छित हो जाते हैं, ऐसी है इस विरह-वेग की तीव्रानुभूति —

हा हा देवि ! स्फुटति हृदयं जानकि, ध्वंसते देहबन्ध:
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि ।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा
विष्वङ्मोह: स्थगयति कथं मन्दभाग्य: करोमि ॥

उत्तररामचरित के तृतीय अंक में राम और सीता का अल्पकालीन साक्षात्कार भी होता है और राम सीता के स्पर्श एवं दर्शन का संजीवन औषधि के रूप में कथन करते हैं —

आतप्तजीवितमन: परितर्पणोऽयं
सञ्जीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्त: ।

भवभूति ने आदर्श दाम्पत्य-प्रणय को नैसर्गिक माना है।

प्रेम बाह्य कारणों पर आश्रित नहीं होता, वरन् एक हृदय का दूसरे हृदय से सम्बन्ध होने का कोई भीतरी कारण होता है, यथा सरोवर में स्थित कमल आकाश स्थित सूर्य को देखकर खिल जाता है और चन्द्रमा उदित होने पर चन्द्रकान्त मणि द्रवित हो जाती है।

भवभूति का दाम्पत्य-प्रणय विशुद्ध प्रेम का चित्रण है जिसमें यौवन की रोमांचकारी अवस्थाओं का चित्रण होते हुए भी काम-लिप्सा का संकेत नहीं। सच्चे प्रेम का रहस्य तो हृदय ही जानता है — हृदयं त्वेव जानाति प्रतियोगं। शुद्ध प्रेम की ज्योति सुख के समीर तथा दुःख के झंझावात से नहीं बुझती। संकोच एवं दुराव होने पर तो प्रेम और भी प्रगाढ़ हो जाता है। प्रिय के सान्निध्य मात्र से प्रेमी का सारा दुःख दूर हो जाता है। दाम्पत्य-प्रणय दुग्ध के समान धवल तथा गंगाजल के समान पवित्र है —

स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते।
धवल बहलमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः॥

दाम्पत्य-प्रणय की चरम परिणति सन्तान की प्राप्ति में है, जो पति और पत्नी के स्नेहसिक्त हृदयों को एक-सूत्र में बाँधनेवाली आनन्दमयी ग्रन्थि है।

भवभूति का उत्तररामचरित का दाम्पत्य-प्रणय-वर्णन आदर्श है। वह कालिदास के नाटकों से अत्यन्त उत्कृष्ट है। यहाँ विदूषक का अभाव भी इसी हेतु है। विदूषक की योजना प्रायः नाटककार नायक की परकीया की प्राप्ति में सहायता पहुँचाने के लिए करते हैं। भवभूति को उदात्त एवं पावन दाम्पत्य-प्रणय का चित्रण करना था, अतः उन्होंने विदूषक की योजना नहीं की।

सारांश यह है कि भवभूति ने दाम्पत्य-प्रेम का जैसा चित्र प्रस्तुत किया है, उससे कुछ सादृश्य रखता हुआ दाम्पत्य-प्रणय कालिदास के मेघदूत में दिखाई पड़ता है किन्तु कालिदास का मेघदूत दाम्पत्य-प्रेम के आदर्श को उस विशिष्ट रूप में प्रस्तुत नहीं कर पाता है, जिसमें भवभूति का 'उत्तररामचरित' करता है।